

इंजीनियरिंग में कोर ब्रांच की ओर फिर बढ़ा रुझान

CITY LIVE...

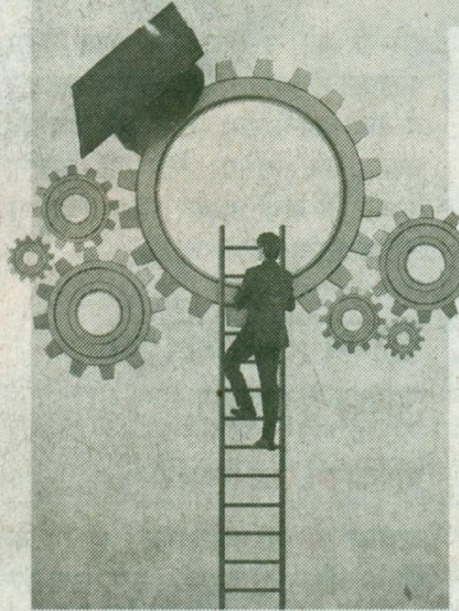
पत्रिका PLUS रिपोर्टर

जयपुर • यूएस में इंडियन टैलेंट को रोकने के लिए प्रेसिडेंट डोनाल्ड ट्रम्प की बीजा पॉलिसीज और आईटी सेक्टर में ग्रोथ नहीं होने का प्रभाव इंजीनियरिंग एडमिशन में सीधे तौर पर दिखाई देने लगा है। बीटेक एडमिशन में इस बार स्टूडेंट्स का रुझान एक बार फिर कोर ब्रांच की ओर बढ़ गया है। इसमें मैकेनिकल ब्रांच स्टूडेंट्स की पहली पसंद बनकर सामने आई है। सिविल और इलेक्ट्रॉनिक्स की ओर भी रुझान है। हालांकि कम्प्यूटर साइंस से मोहभंग होना स्टूडेंट्स के लिए चुनौती है, लेकिन कोर सेक्टर में अपॉर्च्युनिटीज ने उन्हें मूव करना शुरू कर दिया है।

मेक इन इंडिया का इम्पैक्ट

स्टूडेंट्स की चॉइस बदलने की एक बड़ी वजह केन्द्र सरकार का मेक इन इंडिया कैम्पेन को बढ़ावा देना भी है। विशेषज्ञों के अनुसार, जिस तरह से डिमोनेटाइजेशन की वजह से मेन्यूफैक्चरिंग सेक्टर में डाउनफॉल के कयास लगाए जा रहे थे, वैसा नहीं हुआ। उल्टा यह सेक्टर अब तेजी से ग्रोथ कर रहा है। स्टील, सीमेंट, ऑटोमोबाइल और एफएमसीजी सेक्टर को बूस्ट मिल रहा है। दूसरी ओर, कोर सेक्टर से गवर्नमेंट जॉब अपॉर्च्युनिटीज की संभावना भी तलाश की जा रही है। सेवेंथ पे कमीशन और पब्लिक सेक्टर यूनिट्स में बढ़ रही जॉब अपॉर्च्युनिटीज ने इस ओर स्टूडेंट्स का ध्यान आकर्षित किया है। जहां पहले 75 से 80 प्रतिशत प्लेसमेंट

मेक इन इंडिया का प्रभाव, मेन्यूफैक्चरिंग सेक्टर में ग्रोथ और गवर्नमेंट जॉब अपॉर्च्युनिटीज ने किया आकर्षित



सीएस और आईटी में होते थे, वहीं इस बार 100 में से 50 अपॉर्च्युनिटीज में कोर सेक्टर के स्टूडेंट्स को प्राथमिकता रही। उल्लेखनीय है कि इस बार कोर कंपनियों ने भी जयपुर के कॉलेजों में बेहतर प्लेसमेंट किए थे। शहर के विभिन्न कॉलेजों से मिली जानकारी के अनुसार, स्टूडेंट्स और पैरेंट्स कोर सेक्टर की ओर आकर्षित हो रहे हैं। सीएस और आईटी में रहे सीनियर्स और एलुमिनाई से मिल रहे फीडबैक ने उन्हें डायवर्ट किया है। दरअसल, आईटी में पैकेज राइज नहीं कर रहे, यहां स्टूडेंट्स को ग्रोथ की चिंता सामने आ रही है। एक वजह यह भी है कि कोर सेक्टर के स्टूडेंट्स सीएस और आईटी में आसानी से एंट्री कर सकते हैं। उन्हें रिसर्च, रोबोटिक्स और ऑटोमेशन के क्षेत्र में भी काफी सहूलियत होती है।

पीएसयू में अपॉर्च्युनिटीज ने किया अट्रैक्ट

पिछले एक साल में पब्लिक सेक्टर

यूनिट्स, स्टेट ऑर्गेनाइजेशंस और मेन्यूफैक्चरिंग सेक्टर में कोर सेक्टर की बेहतर अपॉर्च्युनिटीज देखी गई हैं। एक निजी यूनिवर्सिटी के एडमिशन हैड प्रो. मनीष जैन ने बताया कि पीएसयू में लगभग 10 हजार जॉब्स का आंकड़ा सामने आया, वहीं 30 से 35 हजार सेंट्रल गवर्नमेंट जॉब्स के तौर पर सामने आई हैं। दूसरी ओर केन्द्र सरकार के सिविल के प्रोजेक्ट्स ने भी स्टूडेंट्स का ध्यान खींचा है। सरकार रेलवे, हाईवे और इन्फ्रास्ट्रक्चर को बढ़ावा देने की पहल कर रही है। ऐसे में इंडस्ट्रियल ग्रोथ बेहतर होने का अनुमान है। डोमेस्टिक प्रोजेक्ट्स पॉजिटिव ग्रोथ की ओर इशारा कर रहे हैं, जिससे स्टूडेंट्स का माइंडसेट चेंज हो रहा है। वहीं एक इंजीनियरिंग कॉलेज के एडमिशन हैड डॉ. नीरज जैन के अनुसार, आईटी सेक्टर जिस तरह से रिपैक्ट कर रहा है, उससे स्टूडेंट्स डायवर्ट हो रहे हैं। आईटी कंपनीज भी उलझाव में हैं। पैकेज राइज नहीं कर रहे, ग्रोथ की चिंता है। तीन से चार साल से इस सेक्टर में स्टेबल सिक्योरेशन है। यही वजह है कि कंपनीज अब रेगुलर रिक्रूटमेंट की बजाय स्टूडेंट्स में स्पेशलिस्ट ढूंढने लगी हैं, जिसमें लेटेस्ट टेक्नोलॉजी के स्किल्स की डिमांड की जा रही है। रूटीन प्लेसमेंट घटना भी स्टूडेंट्स के मूव करने का एक बड़ा कारण बनकर सामने आ रहा है। एक अन्य इंजीनियरिंग कॉलेज के एडमिशन कॉर्डिनेटर संदीप तोषनीवाल ने बताया कि आईटी कंपनीज में पिछले दो से तीन साल में मास रिक्रूटमेंट कम हुए थे। यही वजह है कि इसका प्रभाव कोर सेक्टर को बूस्ट कर रहा है।